International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक दुश्ंचिता

नीतू[1], प्रो.कविता मित्तल[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
[2]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता के अध्ययन को वर्णित गया है। प्रतिदर्श चयन हेतु यादृच्छिक विधि का उपयोग करते हुए 200 विद्यार्थियो को चयनित किया गया जिसमें 100 बालक व 100 बालिकायें सम्मलित है। शोधार्थी ने सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है। प्राप्त आंकड़ो के विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण और प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीको का उपयोग किया गया। परिणाम बतातें है कि लिंग वार शैक्षिक दुश्चिंता बालक और बालिकाओं की समान होती है। ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता मे सार्थक अन्तर पाया गया है शहरी विद्यार्थियों में अधिक शैक्षिक दुश्ंचिता पायी गयी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा, अंत मे सामाजिक प्रस्थिति के सन्दर्भ मे सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों मे शैक्षिक दुश्ंचिता अधिक पायी गयी अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में। सामान्य वर्ग व अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों मे शैक्षिक दुश्ंचिता समान पायी गयी। अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों मे शैक्षिक दुश्ंचिता अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना मे कम पायी गयी।

मुख्य बिंदु–शैक्षिक दुश्ंचिता, विद्यालय स्थिति, सामाजिक प्रस्थिति

प्रस्तावना– शिक्षा जीवन की वह विशिष्ट प्रक्रिया है जो जीवन को निरन्तर नया रूप और आयम प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व यथा शारीरिक, मानसिक नैतिक, संवेगात्मक, भावनात्मक पक्ष के विकास में सहायक होती है। मानव विकास का अर्थ है– मानव तथा उसके लघु संस्करण (बालक/विद्यार्थी) में मूलभूत गुणों का समस्त दिशा में विकास हो जिससे व्यक्ति और समाज दोनो का कल्याण हो सके। अतः शिक्षा द्वारा मानव की अन्तनिर्हित योग्यताओं को विकसित कर समाज समस्त बनाया जाता है।

गाँधी जी के अनुसार "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एंव मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एंव आत्मा के सर्वागीण एंव सर्वोत्तम विकास है"। इस प्रकार से शिक्षा वह साधन है जो व्यक्ति की अर्न्तनिहित योग्यता के विकास के साथ ही उसे आवश्यक कौशलों व गुणों से भी युक्त करती है।

बालक की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र विद्यालय शिक्षा में बालक को औपचारिक शिक्षा प्रदान करते है। विद्यालयी शिक्षा में बालक नये ज्ञान, कौशल, रूचियों, आदतों, मूल्यों व अभिवृतियों आदि को आवश्यकता व इसके महत्व से भी परिचित होता है। किन्तु यह भी सत्य है कि विद्यालयी शिक्षा के दौरान कई बार बच्चों में नकारात्मक प्रवृित्तियाँ व नकारात्मक व्यवहार प्रच्छन्न रूप में विकसित हो जाते है। इन्हीं में से एक नकारात्मक प्रवृत्ति है चिन्ता, चिन्ता से बालक का शैक्षिक अधिगम, निष्पादन अभिप्रेरण व सर्जनात्मक भी नकारात्मक ढ़ंग से प्रभावित होती है।

हॉर्नी के अनुसार(1945) "चिन्ता एक प्रकार की भावना है जो उस समय उत्पन्न होती है जब वह अनुभव करता है कि पूर्ण संसार में अकेला है।"

जब व्यक्ति चिंताग्रस्त होता है तो उसके मन नकारात्मक विचारों की अधिकता होने लगती है। जिस कारण से व्यक्ति अपने कार्य पर ध्यान केन्द्रित नही कर पाता है।

चिन्ता का एक रूप शैक्षिक दुश्ंचिता है। शैक्षिक दुश्ंचिता एक स्थितिजन्य चिन्ता है। विद्यालय का प्रागण, विशिष्ट शिक्षक व विद्यालय गतिविधियाँ कई बार कतिपय विद्यार्थियो में ड़र/भय उत्पन्न करती है। जिनसे बालक दूर भागना चाहता है या विद्यालय में अध्ययन नही करना चाहता है। यह स्थिति ही शैक्षिक दुश्ंचिता है। कतिपय लोगो का मत है कि शैक्षिक दुश्ंचिता केवल परीक्षा सम्बधी होती है जिसमें बालक अनेक प्रकार के भय से घिरा होता है। किन्तु मनोवैज्ञानिको का मानना है कि शैक्षिक दुश्ंचिता परीक्षा, विद्यालय वातावरण, विषय विरोध, पाठ्यक्रम, कक्षा साथियों, खेल के मैदान व शिक्षकों से सम्बधित हो सकती है। शैक्षिक, दुश्ंचिता को मनोवैज्ञानिकों द्वारा अग्र प्रकार से परिभाषित किया गया है।

कसौदी के अनुसार (2010) "शैक्षिक/अकादमिक दुश्ंचिता स्थितिजन्य चिन्ता का ही एक प्रकार है। शैक्षिक दुश्ंचिता केवल परीक्षण सम्बन्धी चिन्ता तथो गणित, भाषा, विज्ञान व विदेशी भाषा की कक्षाओ के प्रति भय भी शामिल है।"

"आइजनेक (2009) के अनुसार शैक्षिक/अकादमिक दुश्चिंता अप्रासंगिक विचारों के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं की ओर ले जाती है। जिसके कारण ध्यान और एकाग्रता मे कमी आ जाती है।"
शैक्षिक दुश्चिंता विद्यार्थी की उपलब्धि को सकारात्मक और नकारात्मक दोनो ही तरीके प्रभावित करती है। सकारात्मक दृष्टि से देखा जाये तो निम्न स्तर की शैक्षिक दुश्चिंता जब बालक में होती है तो वह अपनी शिक्षा, परीक्षा, अधिगम के प्रति अधिक सचेत रहता है और अच्छा करने के लिये अधिक प्रयत्न करता है परन्तु यदि शैक्षिक दुश्चिंता का स्तर अधिक/अत्यधिक हो जाये तो इसका नकारात्मक प्रभाव बालक पर देखा जाता है। बालक में शिक्षा के प्रति अरूचि, विद्यालय न जाना, विद्यालय के क्रियाकलापों में भाग लेने से बचना, गृह कार्य अपूर्ण रहना आदि व्यवहार देखने में आता है।
सम्बन्धित साहित्य अध्ययन शोधकर्त्री द्वारा शैक्षिक दुश्चिंता से सम्बधित शोध साहित्य का अवलोकन किया गया जिसमें से कुछ प्रमुख शोध अग्र प्रकार है।

अल्ताफ हुसैन व प्रो० मोहम्मद यूसुफ गनई (2021) द्वारा अकेड़मिक एंग्जायटी एण्ड़ सैल्फ ऐफीसियेन्सी अमंग अड़ोलनेस ऑफ कश्मीर' के विषय पर शोध किया प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य कश्मीर के किशोरों के बीच शैक्षणिक चिंता और आत्म–प्रभावकारिता का अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु 400 विद्यार्थियों को कुलग्राम और बारामूला जिलों के सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों से यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। इसमें 200 लड़के व 200 लड़कियाँ सम्मलित थी। शैक्षणिक चिंता के मापन हेतु सिदद की और रहमान (2017) द्वारा निर्मित अकेड़मिक एंग्जायटी स्केल का प्रयोग किया गया और आत्म प्रभाविकारिता के मापन हेतु गनी और गनई (2020) द्वारा निर्मित सेल्फ एंफीसेसी स्केल का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि शैक्षणिक चिंता के सन्दर्भ में सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। कश्मीर के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच शैक्षणिक चिंता और आत्म–प्रभाविकता के माध्य एक महत्वपूर्ण नकारात्मक सहसंबध पाया गया।

जीनत खान(2023) ने अपने 'अपने अध्ययन' स्टेबिलटी एण्ड़ । अकेड़मिक एंग्जायटी ऑफ प्राइमरी स्कूल स्टूड़ेन्टस्' विषय पर अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भावनात्मक स्थिरता और शैक्षणिक चिंता के बीच संबध का पता लगाने हेतु किया गया। प्रतिदर्श के रूप कक्षा 8 के विद्यार्थियों को महाराष्ट्र प्रांत के औरंगाबाद जिले के अंग्रेजी माध्यम विद्यालय से यादृच्छिक चयन विधि द्वारा चयनित किया गया। विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिंता के मापन हेतु डॉ० के सेन गुप्ता और ए० के सिंह द्वारा निर्मित अकेड़मिक एंग्जायटी स्केल फॉर चिल्ड्रन मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया और भावनात्मक स्थिरिता को मापने हेतु ए० सेन गुप्ता व डॉ० ए० के सिंह द्वारा निर्मित भावनात्मक स्थिरता परीक्षण का उपयोग किया गया। निष्कर्षों से प्राप्त चला कि शैक्षणिक चिंता और भावनात्मक स्थिरता के बीच कम सकारात्मक संम्बन्ध पाया गया।

राजेश राठौर और धार्मिक चौहान (2023) द्वारा अकेड़मिक एंग्जायटी अमंग प्राइमरी स्कूल स्टूड़ेण्ट्स विषय पर अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य गुजराती और अंग्रेजी माध्यम के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक चिंता का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में 400 छात्रों को यादृच्छि विधि से चयनित किया। इससे 200 छात्र 6 गुजराती माध्यम के प्राथमिक विद्यालयो से थे। विद्यार्थियो की शैक्षणिक चिंता के मापन हेतु डॉ० एके० सिंह और डॉ० ए० सेन गुप्ता द्वारा निर्मित अकेड़मिक एंग्जायटी स्केल फॉर चिल्ड्रन मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि दोनों माध्यम के छात्रों में समान शैक्षणिक चिंता होती है।

समस्या कथन–
उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक दुश्चिंता ।

अध्ययन उद्देश– उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता का अध्ययन निम्न संदर्भ में करना।

- विद्यार्थी लिंग–भेद
- विद्यालय स्थिति
- विद्यार्थी सामाजिक प्रस्थिति

शोध परिकल्पनायें –

1. लिंग भेद के संन्दर्भ में–
उच्च प्राथमिक स्तर पर लिंग भेद के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षिक दुशचिंता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. विद्यालय स्थिति के सन्दर्भ में –
उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यालय स्थिति के सन्दर्भ में विद्यालयों की शैक्षिक दुशचिंता में सार्थक अन्तर नहीं होता हे।

3. सामाजिक प्रस्थिति के सन्दर्भ में–

- उच्च प्राथमिक स्तर पर सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर सामान्य वर्ग व अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर अन्यपिछड़ा वर्ग व अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता मे सार्थक अन्तर नहीं होता है।

जनसंख्या व न्यादर्श–

उत्तर प्रदेश राज्य के मैनपुरी तहसील के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 के विद्यार्थी प्रस्तुत शोध की जनसंख्या है। शोध प्रतिदर्श के रूप में इन विद्यालयों से 200 विद्यार्थियो का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया जिसमें 100 बालक व 100 बालिकायें सम्मिलित है।

शोध उपकरण–

ड़ॉ. सिंह ए. के और डॉ. गुप्ता ए. सेन द्वारा निर्मित अकेड़मिक एंग्जायटी स्केल फॉर चिल्ड्रन मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण– प्रस्तुत शोध मे वर्णनात्मक सांख्यिकीय एंव अनुमानिकी सांख्यिकीय दोनो का ही उपयोग प्रदत्त विश्लेषण हेतु किया गया है। वर्णनात्मक सांख्यिकीय के अन्तर्गत माध्य (Mean), प्रमाणिक विचलन (SD) एंव प्रदत्तों का रेखा चित्रीय प्रदर्शन प्रयुक्त किया है। आनुमानिक सांख्यिकीय के अन्तर्गत ही परीक्षण का प्रयोग किया है।

शोध प्रक्रिया –सर्वप्रथम मैनपुरी तहसील मे स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की सूची बेसिक शिक्षा विभाग (मैनपुरी) से प्राप्त की गयी। जिसमें से 20 राजकीय विद्यालयो को शोध हेतु ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के आधार पर चयन किया गया। चयनित विद्यालयो के प्रधानाचार्यो से सम्पर्क स्थापित कर विद्यार्थियो पर शोध उपकरण का प्रशासन करके शोध प्रदत्तो को एकत्रित किया गया।

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या–

तालिका 1.1

शैक्षिक दुश्चिंता के विभिन्न स्तरों पर लिंगवार विद्यार्थियों का प्रतिशत

शैक्षिक दुश्चिंता के स्तर	बालक	प्रतिशत	बालिकायें	प्रतिशत
उच्च स्तर	02	02%	03	3%
सामान्य स्तर	63	62%	59	59%
निम्न स्तर	36	36%	37	37%

तालिका 1.1 द्वारा स्पष्ट होता है लिंगवार शैक्षिक दुश्चिंता में 2% बालको उच्च स्तर की शैक्षिक दुश्चिंता है। 62%बालको में सामान्य स्तर की शैक्षिक दुश्चिंता है। निम्न स्तर पर 36% बालक आते है।
3% बालिकाओं में उच्च स्तर शैक्षिक दुश्चिंता पायी गयी। 60%बालिकाओं में सामान्य स्तर पाया गया शैक्षिक दुश्चिंता का। निम्न स्तर पर 37% बालिकायें है।
शैक्षिक दुश्चिंता के उच्च व निम्न स्तर बालिकाओं का प्रतिशत बालको के प्रतिशत की तुलना में थोडा अधिक प्राप्त हुआ जबकि शैक्षिक दुश्चिंता के सामान्य स्तर पर बालिकाओं का 3% बालिकों से कम पाया गया।

तालिका 1.1

लिंगवार विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता के माध्यमान में अन्तर का सार्थकता स्तर

	N	मध्यमान	SD	DF	प्राप्त टी मूल्य	टी का सारणी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना की जाँच
बलक	101	9.87	1.89	198	.379	.05 1.96	प्राप्त अन्तर किसी भी स्तर पर सार्थक नही है।	स्वीकृति
बालिकायें	99	9.96	1.44			.01 2.58		

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

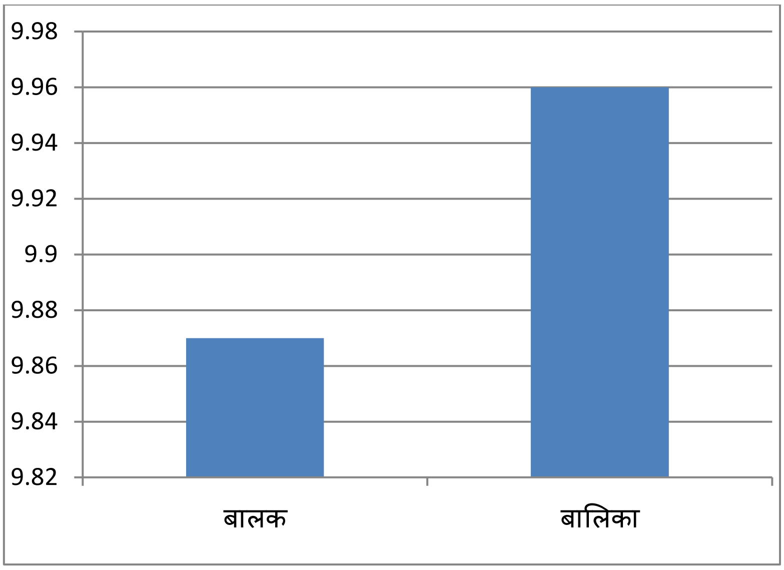

तालिका व रेखाचित्र 1.1 में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययन बालको की शैक्षिक दुश्ंचिता का मध्यमान 9.87 व प्रमाणिक विचलन 1.89 है। बालिकाओं में शैक्षिक दुश्ंचिता का मध्यमान 9.96 व प्रमाणिक विचलन 1.44 है। दोनो माध्यों मे अन्तर की सार्थकता का ही मूल्य .379 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.964 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। प्राप्त टी मूल्य .379, सारणी मूल्य से कम है। अतः बालक तथा बालिकाओ की शैक्षिक दुश्चिंता मे सार्थक अन्तर नही पाया गया।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना 1 उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी लिंग भेद के सन्दर्भ में शैक्षिक दुश्ंचिता मे सार्थक अन्तर नही होता है स्वीकृत होती है। अर्थात बालक और बालिकाओं की शैक्षिक दुश्ंचिता समान होती है।

तालिका 1.2

शैक्षिक दुश्ंचिता के विभिन्न स्तरों पर विद्यालय स्थितिवार विद्यार्थियों का प्रतिशत

स्तर	ग्रामीण विद्यालय	प्रतिशत	शहरी विद्यालय	प्रतिशत
उच्च स्तर	03	3%	02	2%
सामान्य	64	64%	62	62%
निम्न	33	33%	36	36%

तालिका 1.2 द्वारा स्पष्ट होता है कि विद्यालय स्थितिवार शैक्षिक दुश्चिंता मे 3%ग्रामीण विद्यार्थियों मे उच्च शैक्षिक दुश्चिता है। 64%विद्यार्थियों मे सामान्य स्तर की शैक्षिक दुश्चिता है। निम्न स्तर पर 33%बालक आते है।

2%ग्रामीण विद्यार्थियों मे उच्च स्तर की शैक्षिक दुश्चिंता पायी गयी। 62%विद्यार्थियों मे सामान्य स्तर पाया गया। शैक्षिक दुश्चिता का निम्न स्तर पर 36% विद्यार्थी पाये गये।

शैक्षिक दुश्ंचिता के उच्च सामान्य स्तर पर ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थिया का प्रतिशत शहरी विद्यालयो के विद्यार्थियों के प्रतिशत की तुलना मे थोड़ा अधिक प्राप्त हुआ जबकि शैक्षिक दुश्ंचिता के निम्न स्तर पर ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों का 3%कम शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों से कम पाया गया।

तालिका 1.2

विद्यालय स्थितिवार शैक्षिक दुश्ंचिता के मध्यमान मे अन्तर का सार्थकता स्तर

विद्यालय स्थिति	N	मध्यमान	SD	DF	प्राप्त टी मूल्य	टी का सारणी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना की जाँच
ग्रामीण विद्यालय	100	4.61	1.89	198	2.66	0.05 1.96	सार्थक अन्तर है।	अस्वीकृत
शहरी विद्यालय	100	5.26	1.54			.01 2.58		

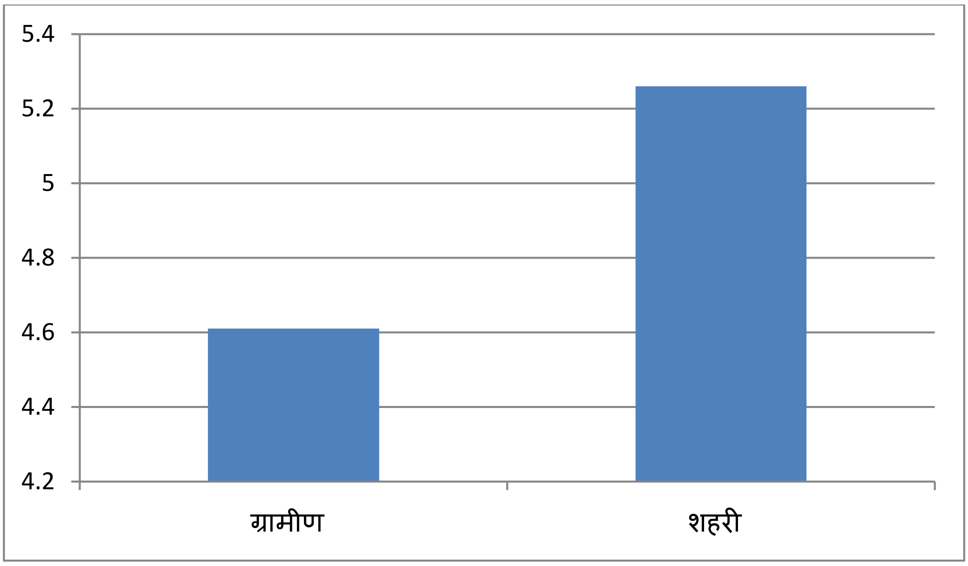

तालिका व रेखा चित्र 1.2 में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययरत ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता का मध्यमान 4.61 व प्रमाणिक विचलन 1.89 है। शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियो मे शैक्षिक दुश्ंचिता का मध्यमान 5.26 व प्रमाणिक विचलन 1.54 है। दोनो माध्यो में अन्तर की सार्थकता का ही मूल्य 2.66 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.964 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। प्राप्त टी मूल्य 2.66 सारणी मूल्य से अधिक है। अतः ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता मे सार्थक अन्तर है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना 2 उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यालय स्थिति के सन्दर्भ मे विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता मे सार्थक अंतर नही होता है। अस्वीकृत होती है। ग्रामीण विद्यार्थियों और शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता मे सार्थक अन्तर होता है। परिणाम स्वरूप शहरी विद्यालयो के विद्यार्थियो मे ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना मे शैक्षिक दुश्ंचिता थोड़ा अधिक पायी गयी।

तालिका 1.3

शैक्षिक दुश्ंचिता के विभिन्न स्तरो पर सामाजिक स्थितिवार विद्यार्थियों का प्रतिशत

शैक्षिक दुश्ंचिता स्तर	सामान्य वर्ग	प्रतिशत	अन्य पिछड़ा वर्ग	प्रतिशत	अनुसूचित वर्ग	प्रतिशत
उच्च	00	0%	05	4%	00	00
सामान्य	14	56%	93	62%	17	68%
निम्न	11	44%	52	34%	8	32%

तालिका 1.3 द्वारा स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्थितिवार शैक्षिक दुश्चिंता में 0%सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों मे उच्च शैक्षिक दुश्ंचिता है। 56%विद्यार्थियो मे सामान्य स्तर की दुश्ंमिता है। निम्न स्तर पर 44%विद्यार्थी आते है।

4% अन्य पिछड़ी वर्ग के विद्यार्थियों मे उच्च स्तर की शैक्षिक दुश्ंचिता पायी गयी। 62% विद्यार्थियों मे सामान्य पाया गया शैक्षिक दुश्ंचिता का। अन्य पिछड़ा वर्ग मे निम्न स्तर पर 34% विद्यार्थी पाये गये।

तालिका 1.3 द्वारा स्पष्ट होता है कि शैक्षिक दुश्ंचिता में पिछड़ा वर्ग के 0%विद्यार्थियों मे उच्च शैक्षिक दुश्ंचिता है। 68%विद्यार्थियों में सामान्य स्तर की शैक्षिक दुश्ंचिता है। 68% विद्यार्थियों में सामान्य स्तर की शैक्षिक दुश्चिंता है। निम्न स्तर पर 32% विद्यार्थी आते है।

तालिका 1.3

सामाजिक स्थितिवार विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता माध्यमान में अन्तर सार्थक व स्तर

सामाजिक स्थिति	N	मध्यमान	SF	DF	प्राप्त टी मूल्य	टी का सारणी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना की जाँच
सामान्य +	200	9.84	1.44	198	16.323	0.05 1.96	प्राप्त अन्तर सार्थक है।	

अन्य पिछड़ा वर्ग		4.6	1.78			0.01 2.58		अस्वीकृत
सामान्य + अनुसूचित वर्ग	200	9.87	1.44	198	.103	0.05 1.96	प्राप्त अन्तर सार्थक है।	स्वीकृत
		9.8	1.35			0.01 2.58		
अन्य पिछड़ा वर्ग + अनुसूचित वर्ग	200	4.6	1.78	198	16.323	0.05 1.96	प्राप्त अन्तर सार्थक है।	अस्वीकृत
		9.8	1.35			0.01 2.58		

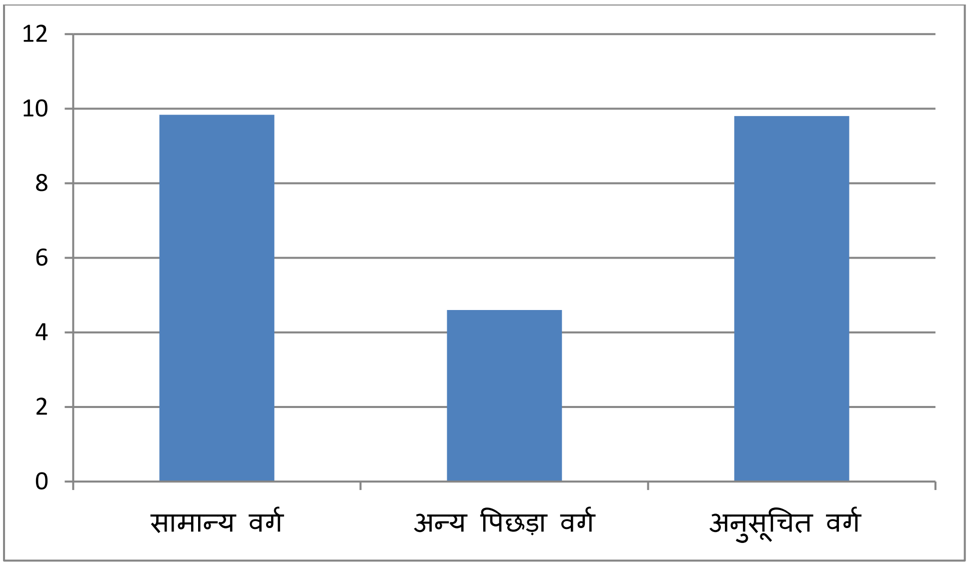

तालिका व रेखाचित्र 1.3 में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता का मध्यमान 9.84 व प्रमाणिक विचलन 1.44 है। अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का अध्ययन 4.6 व प्रमाणिक विचलन 1.78 है। दोनो मध्यो के अन्तर की सार्थकता का टी मूल्य 16.323 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 पर 2.58 है। प्राप्त टी का मूल्य 16.323, सारणी मूल्य से अधिक है। अतः सामान्य वर्ग और अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता मे सार्थक अन्तर है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना 3.1 उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियो की शैक्षिक दूश्ंचिता में सार्थक अन्तर नहीं होता है। अस्वीकृत होती है अतः सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता मे सार्थक अन्तर होता है, अर्थात सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों मे शैक्षिक दुश्ंचिता अधिक पायी गयी अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में।

इसी प्रकार तालिका 1.3 से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता का मध्यमान 9.84 व प्रमाणिक विचलन 1.44 है। अनुसूचि वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 9.8 व प्रमाणिक विचलन 1.35 है। दोनों माध्यों के अन्तर की सार्थकता का टी मूल्य .103 है। टी की सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 व 0.01 पर 2.58 है। प्राप्त टी का मूल्य .103 सारणी मूल्य से कम है, अतः सामान्य और अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता से सार्थक अन्तर नही है।

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना 3.2 उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग व अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता मे सार्थक अन्तर नही होता है, स्वीकृत होती है अर्थात सामान्य वर्ग व अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता समान है।

तालिका 1.3 से स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता का मध्यमान 9. 8 व प्रमाणिक विचलन 1.35 है। अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियो का मध्यमान 4.6 व प्रमाणिक विचलन 1.78 है। दोनो माध्यो के अन्तर की सार्थकता का टी मूल्य 16.32 है। टी का सारणी मूल्य 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.58 है। प्राप्त टी का मूल्य 16.323 सारणी मूल्य से अधिक है। अतः अनुसूचित वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्ंचिता में सार्थक है।

प्रस्तुत विश्लेषणे के आधार पर परिकल्पना 3.3 उच्च प्राथमिक स्तर पर अन्य पिछड़ा व अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्‍चिता मे सार्थक अन्तर नही होता है अस्वीकृत होती है। अनुसूचित वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्‍चिता मे सार्थक अन्तर होता है।
परिणाम स्वरूप अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों में शैक्षिक दुश्‍चिता का स्तर अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों को तुलना मे कम पाया गया।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध के आंकड़ो के विश्लेषण के आधार पर ज्ञात होता है कि लिंगवार बालको व बालिकाओं की शैक्षिक दुश्‍चिता मे कोई अन्तर नही पाया गया। दोनो के मध्य समान शैक्षिक दुश्‍चिता पायी गयी। ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्‍चिता मे अन्तर पाया गया। शहरी विद्यार्थियों मे ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक शैक्षिक दुश्‍चिता पायी गयी। इसी प्रकार सामाजिक स्थितिवार सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों मे शैक्षिक दुश्‍चिता अधिक पायी गयी। अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना मे।सामान्य वर्ग व अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्‍चिता समान पायी गयी। अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों मे शैक्षिक दुश्‍चिता का स्तर अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना मे कम पायी गयी।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

1. राजेश राठौर और धार्मिक चौहान(2023), 'अकेड़मिक एंग्जायटी अमंग प्राइमरी स्कूल स्टूडेन्ट'vol-2.No 3 August 2023 , pp-186, https:s\\www.researcha ate.net
2. जीनत खान (2023) इमोशनल स्टेबिलटी एण्ड़ अकेड़मिक एंग्जायटी ऑफ प्राइमरी स्कूल स्टूडेन्ट्स
3. गुप्ता एस ० पी०, अलका गुप्ता (2012) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड़ ड़िस्ट्री ब्यूटर्स, ।, युनिवर्सिटी रोड़, इलाहाबाद–2
4. सिंह कुमार अरूण (2014), "उच्चतर मैदानिक मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास यू०ए० बंग्लो रोड़ जवाहर नगर दिल्ली (1100)
5. महाजन गौरव (2015) ' अकेड़मिक एंग्जायट ऑफ सेकन्ड़री स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेशन टू देयर पेरेन्टल इनकरेजमेंट'
6. कपिल एच० के (2012), "अनुसंधान विधियाँ एच० पी० भार्गव बुक हाउस, 4/230 कचहरी घाट, आगरा–282004
7. कॉल लोकेश (2008), "शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली" विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि० A22 सेक्टर–4 नोएडा (यू०पी०) 201301
8. श्रीवास्तव ड़ी० एन०, प्रीती वर्मा(2023) श्री विनोद पुस्तक भण्ड़ार मन्दिर आगरा
9. गैरेट हेनरी (2007) पैरागॉन इंटरगॉन इंटरनेशनल पब्लिश, अन्सारी रोड़ दरिया गंज, नई दिल्ली 110002 (भारत)
10. लाल जे० एन० मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय वैशाली प्रकाशन बक्शीपुर गोरखपुर उ० प्र० 273001